वैतालिक

उन्नतर माध्यमिक विद्यालय,
पुस्तकालय,
क्रम संख्या ……
पु० संख्या ……
बड़ागाँव, (झाँसी)

१८० ८९३
११२५

फिर अपने को याद करो।
उठो अलौकिक भाव भरो॥

श्रीमैथिलीशरण गुप्त

Scanned with OKEN Scanner

२०२२ वि०

मूल्य
.४० नये पैसे

श्रीसुमित्रानन्दन गुप्त द्वारा
साहित्य मुद्रण, चिरगाँव (झाँसी) में मुद्रित ।
तथा
साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी) से प्रकाशित ।

Scanned with OKEN Scanner

श्रीगणेशाय नमः

वैतालिक

श्रीरवि-कुल-मणि रघुनायक,
तुमको रहें दीप्तिदायक।
श्रीसीता धन-धान्य भरें,
उर्वर कर्म्म - क्षेत्र करें॥
नई पौ फटी, रात कटी;
तम की अन्तर-पटी हटी।
उठो, उठो, बोलो, बोलो,
खोलो मनो - द्वार खोलो॥

बन्द किवाड़ न रक्खो अब,
कोई आड़ न रक्खो अब।
रुद्ध साँस बह जाने दो,
शुद्ध समीरण आने दो॥
हिम-कण उसे उड़ाने दो,
मिथ्या स्वप्न छुड़ाने दो।
उस कल्पित माया से क्या?
प्राण-हीन काया से क्या?
चिर निद्रा का जाल कटे,
युग युग का जंजाल हटे।
हृदय हृदय से लगने दो;
भय भगने, जय जगने दो॥
उर की आग उभड़ने दो,
प्रेमाहुतियाँ पड़ने दो।
सरस सुगन्धि समाने दो,
मस्तक को बल पाने दो॥
बने कूप मण्डूक निरे,
रहो घरों में ही न घिरे।
आओ, अब बाहर आओ,
ममता में समता लाओ॥

Scanned with OKEN Scanner